मन करता है

जो मैं चाहूँ कर ना पाऊँ,
किसको मन की बात बताऊँ।
मन करता बन जाऊँ तितली,
फूल फूल पर मैं मंडराऊँ
या मैं बन कर नन्हीं चिड़िया ,
आसमान को नाप के आऊँ।

मन करता बन जाऊँ पर्वत,
दुश्मन को ललकार लगाऊँ।
या फिर बन कर बादल मैं भी ,
सारे जग की प्यास बुझाऊँ।

मन करता बन जाऊँ चन्दा,
सबके मन का ताप मिटाऊँ।
या फिर बनकर मैं भी सूरज,
अन्धकार को दूर भगाऊँ।

राज्य परियोजना कार्यालय
सर्व शिक्षा अभियान उत्तराखण्ड, देहरादून।

कविता : डॉ. मंजू पाण्डे 'उदिता', स. अ.
चित्राकंन : राजेन्द्र लाल, प्रवक्ता